स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय खण्ड

— डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे. के. कॉलेज

पंत की काव्यगत विशेषताओं का मूल्यांकन

छायावादी कवियों में पंत प्रकृति प्रेमी के रूप में प्रसिद्ध हैं इसलिए उन्हें प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। इसके अलावा वे मानव सौंदर्य और आध्यात्मिक चेतना के कवि भी माने जाते हैं। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं— उच्छ्वास, पल्लव, ज्योत्स्ना, गुंजन, वीणा, ग्रन्थि, ग्राम्या, युगांत, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, तारापथ, युगवाणी आदि। उनकी आत्मकथा - 'साठ वर्ष : एक रेखांकन (1963)। उनकी काव्यगत विशेषताओं को निम्नलिखित पंक्तियों में देखा जा सकता है।

भाषा -

पंत खड़ी बोली के लोक प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी भाषा सरल है, उसमें चित्रमयता, ध्वन्यात्मकता, संगीतात्मकता एवं लाक्षणिकता की मात्रा विशेष रूप से दृष्टिगत होती है। भाषा में सरल एवं कोमल संस्कृत-ग्रथित शब्दों की योजना है। जैसे -

"अकलुष, अनिन्द्य नक्षत्र एक, ज्यों मूर्तिमान ज्योतित विवेक,
उर में हो दीपित अमर टेक।"

संगीतात्मकता एवं ध्वन्यात्मकता का उदाहरण :

"झम झम झम मेघा
बरसते हैं सावन के
छम छम छम गिरती बूँदें,
चम चम बिजली
चमक रही उर घनके"

चित्रात्मकता - पंत जी की भाषा चित्रमयता भरी है। उनके शब्द भी चित्रमय एवं सस्वर हैं। सुहाग की सुहानी रात्रि में प्रियतम के पास जाती हुई नायिका का चित्र -

"अरे यह प्रथम मिलन अज्ञात। विकम्पित उस मृदु पुलकित गात
लाज की छुई मुई-सी म्लान
प्रिय प्राणों की प्राण"

Scanned with CamScan

छन्द योजना

पंतजी की छन्द योजना अद्भुत है। उन्होंने अधिकतर मात्रिक छन्दों का ही प्रयोग किया है, क्योंकि हिन्दी के शब्द विन्यास की प्रकृति स्वरों से अधिक निर्मित है। अतः राग और संगीत की रक्षा मात्रिक छन्दों में ही हो सकती है। उन्होंने पीयूष वर्षण, रूपमाला, सखी, रोला, चौपाई आदि छन्दों का ही अधिक प्रयोग किया है। उनका कथन है -

"खुल गये छन्द के बन्धन
त्रास के रजत पाश।"

अलंकार

पंत जी ने अपनी कविता में शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोनों का प्रयोग किया है। अनुप्रास अलंकार का सर्वाधिक प्रयोग देखने को मिलता है। साथ ही रूपक, उपमा, उल्लेख, भ्रांतिमान, श्लेष, यमक आदि का प्रयोग भी दिखाई देता है यमक का उदाहरण :

"तरणि के ही संग तरल तरंग से
तरणि डूबी थी हमारी ताल में।"

शब्द चयन - शब्द चयन में पंत जी उदार हैं। संस्कृत की तत्सम शब्दावली के साथ ही ब्रज भाषा, फारसी, अंग्रेजी एवं देशज शब्दों का भी पंत जी ने खूब प्रयोग किया है।

प्रकृति चित्रण - पंत मूलतः प्रकृति के कवि हैं। प्रकृति चित्रण का उदाहरण :

"विहग विहग
फिर चहक उठे ये पुन्ज-पुन्ज
चिर सुभग-सुभग।" विहगों को देखकर हर्ष विभोर हो उठते हैं।

कल्पना - पंत जी की कविताओं का प्रधान साधन कल्पना है। विविध चित्रों का सजीव अंकन, उपमा एवं रूपक की मधुर योजना आदि कल्पना द्वारा ही संभव हुआ है।

Scanned with CamScanner